North Asian International Research Journal of Multidisciplinary

CIF IMPACT FACTOR:4.465

ISSN: 2454-2326 Vol. 4, Issue-7 July-2018

Index Copernicus Value 58.12

बिहार में आर्थिक विकास की समस्याएं एवं संभावनाएं

शम्भु प्रकाष रंजन
शोधार्थी
विषय :– वाणिज्य
वाणिज्य एवं व्यवसाय प्रषासन विभाग
ललित नारायण मिथिला विष्वविद्यालय, दरभंगा

किसी राष्ट्र विषेष द्वारा उत्पन्न की जाने वाली वस्तुओं और सेवाओं के मूल्य में निरंतर वृद्धि को आर्थिक संवृद्धि कहा जाता है। आमतौर पर इसे 'सकल घरेलू उत्पाद' (जीडीपी) या 'सकल राष्ट्रीय आय' की बढ़ोतरी के रूप में व्यक्त किया जाता है। यदि यह बढ़ोतरी आठ प्रतिषत वार्षिक है तो आर्थिक संवृद्धि की वार्षिक दर आठ प्रतिषत होगी। यहां इस बात से कोई सरोकार नहीं होता है कि उत्पादित वस्तुएं और सेवाएं आम आदमी या समाज के बहुसंख्यक लोगों की जरूरतों को पूरा करती है या नही। मसलन जुए को लिया जा सकता है। जहां वह वैध है वहां आर्थिक संवृद्धि में उसका योगदान शामिल किया जाता है।[1]

हम कह सकते है कि आर्थिक विकास एक सतत् प्रक्रिया है, जिसके अन्तर्गत कोई देष अपने समस्त उत्पादक साधनों का अधिकतम कुषल प्रयोग करके वास्तविक राष्ट्रीय आय और प्रति व्यक्ति आय में निरंतर दीर्घकालीन वृद्धि करके ऊँचे स्तर की ओर बढ़ता है। इसके परिणामस्वरूप जीवन–स्तर तथा समाज कल्याण में वृद्धि होती है और देष के सभी नागरिक सुखी जीवन के लिए अधिकाधिक सुविधायें प्राप्त करते हैं।

आर्थिक विकास की प्रमुख विषेषताओं में

- सतत् प्रक्रिया
- वास्तविक आय में वृद्धि तथा
- शुद्ध आय में दीर्घकालीन अथवा निरंतर वृद्धि होना गिनाए जा सकते हैं।

आर्थिक विकास की प्रकृति प्रावैगिक है। जिस प्रकार प्रावैगिक अवस्था में पुराने साम्य टूटकर नये साम्य निर्मित होते रहते है, ठीक उसी प्रकार विकास की पुरानी अवस्थाओं में परिवर्तन ने होने पर नयी अवस्थाओं का निर्माण होता रहता है। वास्तव में आर्थिक विकास का प्रमुख उद्देष्य अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों में उत्पादकता के ऊँचे स्तर को प्राप्त करना होता है, जिसके लिए विकास प्रक्रिया को गतिषील बनाना आवष्यक है। इस उद्देष्य की पूर्ति हेतु विकास प्रक्रिया अर्थव्यवस्था को प्रगति के एक निष्चित साम्य के ऊपर उठाकार किसी अन्य उच्च स्तरीय साम्य को धरातल पर लाकर खड़ा कर देती है।

आर्थिक विकास एक सरल मार्ग नहीं है, इसके मार्ग में अनेक बाधायें आती है। अल्पविकिसित अर्थव्यवस्था में बाजार की अपूर्णताओं के फलस्वरूप उत्पति के साधनों का समुचित आवंटन नही हो पाता है, जिसके कारण साधन अदोहित व अल्पदोहित रह जाते है, बेकारी बढ़ जाती है, श्रमिकों की उत्पादकता घट जाती है, पूँजी की सीमांत दक्षता कम हो जाती है और इस प्रकार आर्थिक विकास अवरुद्ध हो जाता है। भारतीय अर्थव्यवस्था खासकर बिहार राज्य के परिप्रेक्ष्य में आर्थिक विकास की राह में–

(i) निर्धनता का दुष्चक्र
(ii) पूँजी निर्माण की निम्न दर
(iii) उद्यमषीलता एवं प्रबन्धकीय योग्यता का अभाव
(iv) उपयुक्त आधारभूत संरचना का अभाव
(v) पाष्चात्य तकनीकी की अनुपयुक्तता
(vi) लगातार बढ़ती जनसंख्या
(vii) जनसंख्या का नीचा गुणात्मक स्तर
(viii) सामाजिक एवं सांस्कृतिक बाधायें
(ix) प्रषासनिक बाधायें इत्यादि समस्या बनकर बाधा उत्पन्न कर रही है।

आर्थिक विकास का आधार

प्रत्येक देष का आर्थिक विकास अनेक घटकों से प्रभावित होता है। इन्हीं घटकों को आर्थिक विकास के निर्धारक या आधार कहते हैं। यह निर्धारक या आधार कितने हैं इस सम्बन्ध में अर्थषास्त्रियों में एक राय नही है। **नर्कसे (2009)**[2] ने माना कि आर्थिक विकास का मानवीय शक्तियों, सामाजिक मान्यताओं, राजनीतिक दषाओं एवं ऐतिहासिक घटनाओं के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है। उसके विचार में पूँजी आवष्यक तत्व है लेकिन विकास के लिए एकमात्र निर्धारण नहीं है। मेयर एवं बाल्डविन की दृष्टि में आर्थिक विकास के निर्धारक तत्वों को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है। पहले भाग में आधारभूत साधनों की पूर्ति, जैसे जनसंख्या वृद्धि, पूँजी संग्रह, अतिरिक्त साधनों की खोज, नवीन उत्पादन

विधियों का प्रयोग तथा संस्थागत परिवर्तन एवं दूसरे भाग में उत्पादित वस्तुओं की मांग की संरचना में परिवर्तन, जैसे आय के स्तर में परिवर्तन, आय के विवरण में परिवर्तन, उपभोक्तओं की वरीयताओं में परिवर्तन आदि को शामिल किया जा सकता है।

मोटे तौर पर हम आर्थिक विकास के घटकों को दो मुख्य भागों में वर्गीकृत कर सकते हैं:

- आर्थिक घटक एवं
- अनार्थिक घटक।

आर्थिक घटक : आर्थिक विकास को प्रभावित करने वाले आर्थिक घटक में प्रमुख है:

- **प्राकृतिक संसाधन** : किसी भी देष का आर्थिक विकास उस देष के प्राकृतिक संसाधनों जैसे, भौगोलिक स्थिति, खनिज सम्पदा, जल साधन, वन सम्पदा, जलवायु, धरातल बनावट व मिट्टी, आदि पर निर्भर करता है। जिस देष में यह संसाधन जितने अधिक होते हैं वह देष इन संसाधनों का उतना ही अधिक उपयोग कर अपनी उन्नति व विकास कर

सकता है। इसके विपरीत, यदि किसी देष में इन संसाधनों का उचित रूप से उपयोग नहीं किया जाता या उस देष में प्राकृतिक संसाधनों का अभाव है तो उस देष में आर्थिक विकास उचित प्रकार से नहीं किया जा सकता है।

- **श्रम शक्ति व जनसंख्याः** किसी भी देष का आर्थिक विकास उस देष की श्रम शक्ति व जनसंख्या पर भी निर्भर रहता है। यदि किसी देष में श्रम शक्ति निर्बल व आलसी है तो उस देष का आर्थिक विकास धीमी गति से होता है लेकिन इसके विपरीत यदि श्रम शक्ति साहसी, तेजस्वी एवं सबल है तो परिश्रम व उत्साह के बल पर वह देष तेज गति से उन्नति कर सकता है। इसके लिए जर्मनी का उदाहरण बहुत ही उपयुक्त है। द्वितीय विष्वयुद्ध में यह देष बिल्कुल जर्जर हो गया था लेकिन इसके बाद 15–20 वर्षो में इस देष ने काफी उन्नति की। यह उसकी श्रम शक्ति के साहस का ही परिणाम है।

  जनसंख्या वृद्धि भी एक देष के आर्थिक विकास को प्रभावित करती है। विकसित देषों में जनसंख्या वृद्धि उनके आर्थिक विकास में सहयोग देती

  है लेकिन अल्प–विकसित देषों में जनसंख्या वृद्धि एक अभिषाप है क्योंकि इससे प्रति व्यक्ति उत्पादन कम हो जाता है। इसका कारण यह है कि अल्प–विकसित देषों में जिस दर से जनसंख्या बढ़ती है उस दर से पूँजीगत साधनों व तकनीकी ज्ञान में वृद्धि नहीं होती है। इससे जनता के लिए समस्याएँ पैदा हो जाती है। प्रति व्यक्ति आय कम हो जाती है। जीवन–स्तर गिर जाता है। मूल्य बढ़ जाते है। बचत व पूँजी निर्माण की दरों में कमी हो जाती है।[3] अतः इस बात की आवष्यकता है कि जनसंख्या का उचित नियोजन एवं अनुकूलतम उपयोग करके आर्थिक विकास की गति को तेज किया जा सकता है।

- **पूँजी–निर्माणः** आधुनिक आर्थिक विकास का मूल आधार पूँजी है। भारतीय योजना आयोग के अनुसार ''किसी भी देष का आर्थिक विकास पूँजी की उपलब्धता निर्माण में निहित है।'' श्री गिल के मत में, ''पूँजी–निर्माण उन मुख्य घटकों में से एक है, जो आधुनिक युग में समृद्ध राष्ट्रों को निर्धन राष्ट्रों से एवं औद्योगिक युग को विष्व के पिछले इतिहास से अलग करता है।'' इस प्रकार यदि किसी देष में पूँजी–निर्माण नहीं होता है तो वह देष अपना आर्थिक विकास नहीं कर सकता है। इसी प्रकार यदि पूँजी–निर्माण धीमी गति से होता है तो आर्थिक विकास भी धीमी गति से होगा। पूँजी–निर्माण से अर्थ बचत करने एवं उस बचत को उद्योग में विनियोजित करने से है।

- **तकनीक तथा नवाचारः** किसी भी देष के आर्थिक विकास पर तकनीक तथा नवाचार का भी प्रभाव पड़ता है। तकनीक से अर्थ होता है नवीन वस्तुओं के उत्पादन से तथा नवाचार का अर्थ होता है पुरानी वस्तुओं की उत्पादन प्रक्रिया में सुधार से। जिस देष में वैज्ञानिक एवं प्राविधिक प्रगति तेज होती है उस देष के बाजार में नयी–नयी वस्तुएँ आ जाती है व पुरानी वस्तुओं में सुधार हो जाता है। श्रम की उत्पादकता में वृद्धि हो जाती है। उत्पादन लागत घट जाती है। इन सबसे देष का आर्थिक विकास भी होता है। जिन देषों में तकनीक, नवाचार, वैज्ञानिक एवं प्राविधिक प्रगति धीमी गति से होती है वहाँ आर्थिक विकास भी धीमी गति से होता है।

- **पूँजी–उत्पादन अनुपात** : किसी देष का पूँजी–उत्पादन अनुपात भी उस देष के आर्थिक विकास के निर्धारित घटकों में से एक है। पूँजी–उत्पादन अनुपात से अर्थ है कि उत्पादन की एक इकाई के लिए पूँजी की कितनी इकाइयों की आवष्यकता है। इसी को दूसरे शब्दों में इस प्रकार भी कह सकते है कि उपलब्ध पूँजी का निवेष करने पर उत्पादन में किस दर से वृद्धि होती है। उदाहरण के लिए, यदि पाँच हजार की पूँजी विनियोजित करने पर उत्पादन एक हजार रूपये के बराबर होता है तो पूँजी–उत्पादन अनुपात 5:1 कहलायेगा। जिस देष में यह अनुपात जितना कम होगा वह देष उतना ही अधिक आर्थिक विकास कर सकेगा।

  पूँजी–उत्पादकता तकनीकी विकास, विनयोग की प्रकृति, प्रबन्धकीय कुषलता तथा अन्य कई बातों पर निर्भर करती है। अतः पूँजी–उत्पादन अनुपात निकालना कठिन होता है। अर्थषास्त्रियों की यह विचारधारा है कि पिछड़े एवं अल्प–विकसित देषों में पूँजी–उत्पादन अनुपात ऊँचा होता है। अतः इन देषों की पूँजी कम उत्पादक मानी जाती है।

- **संगठन** : एक देष के आर्थिक विकास पर उस देष के संगठनात्मक पहलू का भी प्रभाव पड़ता है। यदि किसी देष में साहसी, अच्छा नेतृत्व प्रदान करने वाले, दूरदर्षी, परम्परागत बाधाओं को तोड़ने वाले, महत्वकांक्षी, आदि गुण रखने वाले व्यक्ति अधिक होते है तो वह देष अपना अच्छा आर्थिक विकास कर सकता है लेकिन जिन देषों में इन गुणों वाले व्यक्तियों का अभाव हो वे देष आज भी अनेक नवीनतम और आधुनिक तकनीकी आविष्कार होने के बावजूद भी पिछड़े हुए है और अल्प–विकसित देषों की श्रेणी में आते हैं। इस प्रकार देष का संगठन भी आर्थिक विकास पर प्रभाव डालता है और यह एक महत्वपूर्ण घटक है।

- **वित्तीय स्थिरता** : एक देष का आर्थिक विकास उस देष की वित्तीय स्थिति पर निर्भर करता है। यदि देष में मुद्रा–प्रसार सीमा में रहता है तथा ब्याज दर कम रहती है तो देष का आर्थिक विकास होता है जबकि इसकी विपरीत स्थिति में देष के आर्थिक विकास में बाधा उत्पन्न हो जाती है। इस प्रकार आर्थिक विकास पर देष की वित्तीय स्थिति का प्रभाव पड़ता है।

- **विकासात्मक नियोजनः** एक देष का विकासात्मक नियोजन भी उसके आर्थिक विकास पर प्रभाव डालता है। यदि एक देष में विकासात्मक नियोजन सफल रहता है तो उस देष का आर्थिक विकास भी सफल रहता है। इस प्रकार विकासात्मक नियोजन भी आर्थिक विकास का एक निर्धारक घटक है।

अनार्थिक घटक

आर्थिक विकास के निर्धारक आधार या प्रभावित करने वाले अनार्थिक–घटक पाँच माने जाते हैं जो कि निम्नलिखित है :

- **सामाजिक घटक** : एक देष का सामाजिक वातावरण एवं उसकी संस्थएँ भी उस देष के आर्थिक विकास को प्रभावित करती है। इसका कारण यह है कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। अतः समाज की कुछ परम्पराएँ, प्रथाएँ, मनोवृत्तियाँ, रीति–रिवाज, आदि ऐसे होते है जो मनुष्य को उन्हें पालन करने या मानने के लिए बाध्य करते है। यदि मनुष्य इन

सीमाओं से ऊपर उठकर समाज की उन्नति की इच्छा रखता है, विकास के लिए तत्पर है तथा नवीन विधियों का प्रयोग करने के लिए उत्सुक है तो आर्थिक प्रगति होती है अन्यथा ऐसा सामाजिक वातावरण प्रगति में बाधक सिद्ध होता है। इसलिए **प्रो. गिल ने** अपनी पुस्तक *'Economic Development'* में लिखा है कि " **आर्थिक विकास कोई यान्त्रिक प्रक्रिया नहीं है। यह एक मानवीय उपक्रम है और अन्य मानवीय उपक्रमों के समान इसका फल अन्तिम रूप से मनुष्यों की योग्यता, गुणों एवं मनोवृत्तियों पर निर्भर करेगा।**"

- **धार्मिक घटक:** आर्थिक विकास पर धार्मिक भावनाओं एवं विष्वासों का भी प्रभाव पड़ता है। धार्मिक भावनाएँ रूढ़िवादिता एवं अंधविष्वास को जन्म देती है जिसके परिणामस्वरूप नवीनता का विरोध होता है। यही कारण है कि **प्रो. लुईस** ने लिखा है कि **"कोई देष असंगत धार्मिक सिद्धान्तों को अपनाकर अपनी आर्थिक उन्नति का गला घोंट सकता है या नये उन्नतिषील विचार को अपनाकर आर्थिक विकास की गति तेज कर सकता है।"**
- **राजनीतिक घटक :** राजनीतिक घटक भी आर्थिक विकास को प्रभावित करते है। यदि देष में राजनीतिक स्थायित्व है, शान्ति व सुरक्षा है, सरकार के प्रति जनता में विष्वास है तो उस देष में आर्थिक विकास कार्य तेजी से चलाया जा सकता है। इसके विपरीत स्थिति में आर्थिक विचार हतोत्साहित होगा। इसीलिए **प्रो. लुईस** ने कहा कि **"कोई देष की राजनीतिक प्रभुसत्ता, सरकारी स्वरूप, सरकारी दृष्टिकोण में विकास की सजगता, प्रषासन की श्रेष्ठता, विकास से सम्बन्धित प्रष्नों पर राजनीतिक विचारधारा, आदि का आर्थिक विकास पर निर्णायक प्रभाव पड़ता है।"**
- **अन्तर्राष्ट्रीय घटक :** एक देष के आर्थिक विकास पर अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियों का भी प्रभाव पड़ता है। यदि अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति सामान्य है और पड़ोसी देषों से सम्बन्ध अच्छे है तो आयात–निर्यात को बढ़ावा दिया जा सकता है और देष का आर्थिक विकास किया जा सकता है। इसकी विपरीत स्थिति में अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा नहीं मिलेगा और विकास तीव्र गति से नहीं होगा।
- **विकास की आकांक्षा:** एक देष के आर्थिक विकास पर वहाँ के निवासियों के विकास की आकांक्षा अर्थात इच्छा का बड़ा प्रभाव पड़ता है। यदि निवासी आकांक्षा रखते है तो विकास तेज गति से होता है। लेकिन इसके विपरीत यह वहाँ के निवासी आलसी व भाग्यवादी है तो आर्थिक विकास मन्द गति से होता है।[4]

आर्थिक विकास की रणनीति

एक अन्य विकसित अर्थव्यवस्था को स्वप्रेरित अर्थव्यवस्था में बदलने के लिए आर्थिक विकास की उचित रणनीति या संयोजना अपनायी जानी चाहिए। इस रणनीति या संयोजना को अपनाने में दो उद्देष्यों को ध्यान में रखना चाहिए : (i) न्यूनतम प्रयास से अधिकतम सम्भावित विकास दर प्राप्त करना, व (ii) विकास की एक अवस्था से दूसरी अवस्था में जाने में अधिक समय न लगना।

आर्थिक विकास की संयोजना के संबंध में अर्थषास्यिों में दो विचारधाराएँ हैं :

(1) सन्तुलित विकास व (2) असन्तुलित विकास

(1) सन्तुलित विकास : सन्तुलित विकास से अर्थ देष के विभिन्न प्रकार के क्षेत्रों का एक साथ विकास करने से है। इसमें सभी उद्योगों को एक साथ सन्तुलित रूप से आगे बढ़ाया जाता है। इस प्रकार सन्तुलित विकास का आषय सामंजस्यपूर्ण एवं चहुँमुखी विकास से है जिसमें अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों में विकास होता है। सन्तुलित विकास में किसी प्रकार की बाधाएँ नहीं होती है। जन शक्ति व पदार्थो का अपव्यय नहीं होता है। वस्तुएँ उपभोक्ता अभिरुचियों के अनुरूप बनायी जाती है। सभी उद्योगों का उत्पादन सरलता से बिक जाता है। पूँजीगत वस्तुएँ भी आवष्यकतानुसार उत्पादित होती है। इस प्रकार की विचारधारा रखने वाले अर्थषास्त्रियों में रेगनर नर्कसे, लीविस, ऐलिन यंग, रोजेनस्टीन रोडां, आदि प्रमुख हैं।

(2) असन्तुलित विकास : आर्थिक विकास संयोजना की दूसरी विचारधारा असन्तुलित विकास की है। इसमें पहले कुछ चुने हुए क्षेत्रों में ही विकास किया जाता है और केवल उन्हीं क्षेत्रों को पहले विकास हेतु लिया जाता है, जिनके विकास की सम्भावनाएँ है तथा जिनके लिए पर्याप्त सुविधाएँ उपलब्ध है। अतः आरम्भ में विकास उन्हीं क्षेत्रों में किया जाना चाहिए जो विकास को अधिक दर प्रदान कर सकते है। इसके लिए पूँजीगत वस्तुओं के उद्योगों को प्राथमिकता दी जा सकती है। ऐसा करने से उपभोक्ता उद्योगों के विकास के लिए आधार तैयार हो जाता है। बाद में उपभोक्ता उद्योगों को विकसित किया जा सकता है। यह संयोजना उन देषों के लिए बहुत उचित है जिनके साधन सीमित है। वे अपने विकास को धीरे–धीरे क्रमानुसार कर सकते हैं। असन्तुलित विकास की विचारधारा को प्रतिपादित करने वाले अर्थषास्त्रियों में प्रो. रोस्टोव, पॉल स्ट्रीटन व प्रो. हर्षमैन प्रमुख हैं।

शोध समस्या का विवरण

बिहार पुर्नगठन विधेयक, 2000 संसद द्वारा पारित हो जाने के बाद बिहार का विभाजन हो गया। 1937 में ब्रिटिष साम्राज्यवाद ने भौगोलिक एवं आर्थिक विषमता को दूर करने के उद्देष्य से बिहार को बंगाल से अलग राज्य के रूप में गठित किया। जनजातियों की सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक विषमता को दूर करने के लिए एक अलग झारखंड राज्य का गठन हुआ। बिहार के 18 जनजाति बहुत जिलों को मिलाकर झारखंड राज्य का गठन हुआ।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद बिहार राज्य के विकास की धीमी प्रक्रिया के कारण बिहार को एक 'बिमारू' राज्य का दर्जा दिया गया। अब इस 'बिमारूपन' को दो भागों में विभक्त कर दिया गया। भौगोलिक दृष्टिकोण से झारखंड राज्य का क्षेत्रफल पूरे बिहार का 45.85 प्रतिषत हो गया एवं आबादी 25.30 प्रतिषत हो गई। इस प्रकार शेष बिहार का कुल क्षेत्रफल 92.2 लाख वर्ग किलोमीटर हो गया एवं 8.3 करोड़ इसकी आबादी हो गई (2011 में 10.4 करोड़)[5]। जनसंख्या का घनत्व 880 प्रति वर्ग कि.मी. (2011 में 1102 प्रति वर्ग कि.मी)[6] हो गया फलस्वरूप भूमि पर जनसंख्या का भार काफी अधिक हो गया एवं प्रति व्यक्ति भूमि उपलब्धता 1.45 हेक्टेयर हो गया। इसका प्रतिकूल प्रभाव न केवल आर्थिक विकास पर पड़ा बल्कि शेष बिहार की सामाजिक–आर्थिक स्थिति जो पहले दयनीय थी आज जर्जर हो चुकी है। बिहार में प्रति व्यक्ति आय 16119 रू. है जो समस्त भारत के औसत से (46492) काफी कम है। जहाँ तक दरिद्रता का प्रष्न है, गरीबी के परिमाप पर वर्ष 2004–05 से संबंधित अद्यतन जानकारी के अनुसार तेंदुलकर समिति ने बिहार में 55.7 प्रतिषत ग्रामीण परिवारों और 43.7 प्रतिषत शहरी परिवारों के गरीबी रेखा के नीचे होने का अनुमान किया था।[7] इसका अर्थ यह हुआ कि बिहार में गरीबी अनुपात 54.4 प्रतिषत है। ये

गरीबी अनुपात संपूर्ण भारत की तुलना में काफी अधिक है। सम्पूर्ण भारत का गरीबी अनुपात 37.2 प्रतिषत है – शहरी क्षेत्रों के लिए 25.7 प्रतिषत और ग्रामीण क्षेत्रों के लिए 41.8 प्रतिषत।

राज्य में गरीबी, बढ़ती जनसंख्या, जनसंख्या का नीचा गुणात्मक स्तर, पूँजी निर्माण की निम्न दर, आधारभूत संरचना का अभाव, उद्यमषीलता का अभाव जैसी समस्याएँ विद्यमान है। ऐसे में प्रस्तुत अध्ययन में राज्य के आर्थिक विकास की समस्याओं एवं संभावनाओं का अध्ययन किया गया है तथा इसमें अनुकूल स्थिति प्राप्त करने के लिए आवष्यक संभावनाओं पर विचार किया गया है।

आर्थिक विकास – एक बहुमुखी धारणा

आर्थिक विकास एक बहुमुखी धारणा है, जिसमें केवल मौद्रिक आय में ही वृद्धि नहीं होती, वरन वास्तविक आदतों, षिक्षा, जनस्वास्थ्य, अधिक आराम और वास्तव में पूर्ण व सुखी जीवन को निर्धारित करने वाली समस्त सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियों में सुधार होता है। संयुक्त राष्ट्र–संघ रिपोर्ट का अध्ययन स्वीकार करता है आर्थिक विकास की भौतिक आवष्यकताओं से नहीं वरन् उसके जीवन की सामाजिक दषाओं की उन्नति से भी संबंधित होता है। मायर एवं बाल्डविन ने आर्थिक विकास को एक ऐसी प्रक्रिया माना है, जिसके द्वारा दीर्घकाल में किसी अर्थव्यवस्था की राष्ट्रीय आय में वृद्धि होती है। डब्ल्यू ए. लेविस के अनुसार आर्थिक विकास का अर्थ प्रति व्यक्ति उत्पादन से लगाया जाता है। प्रति व्यक्ति उत्पादन वृद्धि एक ओर उपलब्ध प्राकृतिक साधनों पर तथा दूसरी ओर मानवीय व्यवहार पर निर्भर करती है। अतः कहा जा सकता है कि आर्थिक विकास से उस प्रक्रिया का ज्ञान होता है, जिसके द्वारा किसी देष अथवा प्रदेष के निवासी उपलब्ध साधनों का प्रयोग प्रति व्यक्ति वस्तुओं की उत्पत्ति करने में निरंतर वृद्धि के लिए करते हैं।

यह निर्विवाद है कि अल्पविकसित देषो में जनसंख्या की तीव्र वृद्धि आर्थिक विकास में बाधक रही है। इन देषों में यह एक अभिषाप है क्योंकि वह वस्तुओं तथा सेवाओं के मूल्य में वृद्धि करती है जिससे लोक–व्यय में वृद्धि होती है, प्रति व्यक्ति आय व बजत में कमी होती है और फलस्वरूप लोगों का रहन–सहन का स्तर गिर जाता है। इसका पूँजी निर्माण पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

प्रो0 आर नर्क्से के अनुसार, आर्थिक विकास एक जटिल प्रक्रिया है और उन पर केवल आर्थिक का ही नही बल्कि अनार्थिक घटकों यथा– राजनैतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक घटकों का भी प्रभाव पड़ता है। सामाजिक वातावरण का आर्थिक विकास पर निर्णायक प्रभाव पड़ता है। संयुक्त राष्ट्र संघ के विषेषज्ञों के एक प्रतिवेदन के अनुसार, आर्थिक विकास के लिए आवष्यक है कि लोगों में प्रगति की प्रबल इच्छा हो, वे इसके लिए हर सम्भव त्याग करने को तत्पर हो, वे अपने आपको नये विचारों के अनुकूल ढ़ालने के लिए जागरूक हों और उनकी सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक व वैधानिक संस्थायें इस इच्छाओं को कार्यरूप में परिणत करने में सहायक हो।[9]

भारत में पिछले दो दषकों का अनुभव यह दर्षाता है कि तीव्र आर्थिक वृद्धि के बावजूद जो रोजगार के अवसर बनाए गए वे अपर्याप्त थे। रोजगार रहित आर्थिक वृद्धि एक चिंता का विषय है लेकिन दूसरी तरफ, हमें आर्थिक वृद्धि रहित रोजगार नहीं चाहिए। दूसरे शब्दों में, आर्थिक वृद्धि के बिना रोजगार पैदा करने का नीति–निर्धारण नहीं होना चाहिए। हमें उत्पादनषील रोजगार लाने होंगे **(देव, 2013)**[10]। इतना ही नहीं, भारत ने उच्च आर्थिक वृद्धि दर हासिल की लेकिन उच्च गरीबी उन्मूलन

दर हासिल नहीं कर सका। ऐसा खासकर 1990 के दषक में दृष्टिगोचर हुआ। नीतियों को आर्थिक और श्रमिक बाजार दोनों मोर्चो पर अपनाए जाने की जरूरत है **(इस्लाम, 2013)**। जिस रफ्तार से दुनिया के बाकी देषों ने तेज आर्थिक विकास के सहारे गरीबी और बेरोजगारी में जोरदार कमी की है, हम वह रफ्तार नही हासिल कर पाए हैं। सीधे लफ्जों में कहें तो हमारा विकास समावेषी नही रहा है और इसका फायदा पहले से ही संपन्न तबकों तक ही सीमित रहा है **(सेन, 2013)**। अगर अर्थव्यवस्था को ऊँची विकास दर के स्थायी रास्ते पर लाना है और विकास का फल सब लोगों तक पहुंचना है तो समावेषी ऊँची विकास दर के लिए हमें आधारभूत चीजों की तरफ लौटना होगा।

अध्ययन का उद्देष्य

इस अध्ययन का उद्देष्य –

1. बिहार की आर्थिक संरचना का अध्ययन करना,
2. राज्य की आर्थिक समस्या के स्वरूप तथा कारणों का अध्ययन करना,
3. आर्थिक विकास संबंधी सरकारी प्रयासों की समीक्षा करना,
4. आर्थिक विकास के नए अवसरों/संभावनाओं की पहचान करना तथा
5. किन्हीं अन्य संबंधित मुद्दों की चर्चा करना है।

अध्ययन का महत्व

बिहार की आर्थिक संरचना का आधारभूत लक्षण इसका प्राथमिक उत्पादनषील होना है। कृषि में प्राप्त आय का भाग कृषि में लगे जनसंख्या के भाग की तुलना में कम है। राज्य में श्रम शक्ति पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है, परंतु पूँजी का अभाव है। पूँजी के अभाव के कारण औद्योगीकरण नही हो पाया। स्वास्थ्य की दषा चिन्तनीय है। वित्तीय संस्थाओं का साख प्रवाह अपर्याप्त है। राज्य के 28 जिलों में प्रति वर्ष बाढ़ से फसलों को क्षति पहुँचती है। वर्षो से बिहार पिछड़े राज्य की श्रेणी में शामिल है। अधिसंरचना के अभाव में बिहार के विकास के विषय में सोचा नहीं जा सकता है। हरित क्रांति का कृषि पर प्रभाव नगण्य पाया गया। संस्थानिक संस्थाओं की असफलता आर्थिक विकास का सबसे बड़ा कारण माना जा सकता है। केन्द्र सरकार द्वारा प्रथम योजना से ही बिहार को उपेक्षित रखा गया। विभिन्न योजनाओं में बिहार का प्रति व्यक्ति योजना खर्च तथा प्रति व्यक्ति सहायता को अन्य राज्यों के वनिस्पत न्यूनतम ही रखा गया।

बिहार का आर्थिक विकास मौजूदा श्रम शक्ति, उपजाऊ जमीन, प्रचूर जल उपलब्ध पूँजी एवं कौषल को ध्यान में रखकर किया जा सकता है। उपलब्ध पूँजी का बड़ा भाग कृषि क्षेत्र में निवेष होना चाहिए। कृषि क्षेत्र में ग्रामीण अधिसंरचना एवं सिचाई पर पर्याप्त पूँजी निवेष कर कृषि के विकास की वृद्धि–दर को बढ़ाया जा सकता है। ग्रामीण औद्यागिकीकरण के माध्यम से ही ग्रामीणों के लिए रोजगार के अतिरिक्त अवसर पैदा किए जा सकते हैं। इसका प्रभाव ग्रामीण आय पर पड़ेगा। कृषि विकास में वृद्धि होने से कृषि से जुड़ी आबादी की आय में बढ़ोत्तरी होगी एवं कृषि क्षेत्र से संबंधित अन्य आर्थिक क्रियाओं में गति आने से अतिरिक्त रोजगार के अवसर सृजित होंगे जिससे गैर–कृषि क्षेत्र का विकास ही नहीं होगा बल्कि इसकी आय में भी बढ़ोत्तरी होगी एवं प्रछन्न बेरोजगारी से जुड़ी आबादी के लिए यह एक सकारात्मक परिवर्त्तन होगा।

प्रस्तुत अध्ययन बिहार के

- आर्थिक विकास की आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं प्रषासनिक बाधाओं की पहचान करने,
- सरकारी प्रयासों की समीक्षा तथा
- अनुकूल स्थिति प्राप्त करने के लिए आवष्यक संभावनाओं को तलाषने को प्रस्तावित है। अतः षिक्षकों, छात्रों, शोधकर्त्ताओं, नीति–निर्माताओं के लिए अध्ययन प्रासंगिक एवं लाभप्रद साबित होगा।

देष का सबसे अधिक 55 फीसदी युवा आबादी बिहार में है। यह शुभ संकेत है। बस इनमें उद्योग आधारित कौषल बढ़ाना होगा।[11] बिहार भारत के सबसे तेज गति से विकास कर रहे राज्यों में एक है। विकास की तुलना अन्य गरीब राज्यों के प्रदर्षन के साथ की जानी चाहिए। अगर बिहार आर्थिक विकास की दर को बरकरार भी रखता है तब भी बिहार की प्रति व्यक्ति आय राष्ट्रीय औसत के बराबर लाने में काफी समय लगेगा।[12] ग्रामीण आबादी पहले से ही जर्जर हो चुके कृषि क्षेत्र पर फंसी हुई है और युवा आबादी काम के अभाव में अर्थव्यवस्था के अनौपचारिक क्षेत्र में जूझ रही है। बिहार बदहाल है। ऐसी स्थिति में वर्तमान अध्ययन जो राज्य के आर्थिक विकास की समस्याओं और संभावनाओं के विष्लेषण के उद्देष्य से दिया गया है, बेहद ही समीचीन है।

शोध–प्राक्कल्पना

हमारा अध्ययन निम्नांकित प्राक्कल्पनाओं पर आधारित रहाः

- बिहार राज्य के आर्थिक विकास में आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं प्रषासनिक बाधायें है।
- आर्थिक विकास की गति को तेज करने में सहायक अवसर/संभावनाएँ विद्यमान है।
- आर्थिक विकास को बढ़ावा देने हेतु जारी सरकारी प्रयासों के लिए मषीनरी तंत्र को और अधिक सुदृढ़ करने की जरूरत है।

शोध–प्रणाली

प्रस्तुत अध्ययन विष्लेषणात्मक प्रकृति का है। इस उद्देष्य से आँकड़ों के एकत्रीकरण के लिए

(i) प्राथमिक स्रोत एवं

(ii) द्वितीयक स्रेत– दोनों स्रोतों की सहायता ली गयी।

प्राथमिक आँकड़ों के संग्रहण में संरचित साक्षात्कार विधि का उपयोग किया गया। राज्य के उत्तरी तथा दक्षिणी भागों से 100–100 लोगों का (कुल 200) चयन यादृच्छिक प्रतिचयन विधि (Random Sampling Method) के सहारे किया गया। साक्षात्कार के क्रम में बिहार राज्य के संदर्भ में आर्थिक विकास की समस्याओं और संभावनाओं से जुड़े पहलुओं को शामिल करने का प्रयास किया गया। आर्थिक विकास को बढ़ावा देने में सरकारी प्रयासों की सफलता–विफलता को विष्लेषित करने का भी प्रयास किया गया।

द्वितीयक आँकड़ों के स्रोत विभिन्न

- पुस्तकें

- पत्र–पत्रिकाएँ
- दैनिक समाचार पत्र
- सन्दर्भ वार्षिकी
- आर्थिक समीक्षा
- समितियों के प्रतिवेदन
- अन्य सरकारी प्रकाषन तथा
- वेबसाइट इत्यादि रहे।

इस तरह संग्रहित आँकड़ों को संपादित कर गणितीय/सांख्यकीय विधियों का प्रयोग कर यथा–

(i) प्रतिषतता की माप

(ii) प्रवृत्ति विष्लेषण

(iii) आनुपातिक विष्लेषण

(iv) औसत इत्यादि।

विश्लेषण एवं निवर्चन (Analysis and Interpretation) किया गया।

तुलनात्मक स्थितियों का विवेचन करने के उद्देष्य से आवष्यकतानुसार

- आयत चित्रों
- दण्डालेखों
- वृत्त चाटों
- सारणीयन इत्यादि का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन का क्षेत्र बिहार राज्य है तथा विषय वस्तु आर्थिक विकास की समस्याओं तथा सम्भावनाओं का अध्ययन करना रहा है। सरकार के द्वारा जारी प्रयासों का समीक्षात्मक अध्ययन भी किया गया है।

अध्ययन की समय–अवधि 2000 ई. से 2015 ई. तक की रही है। अध्ययन इन काल–अवधियों पर केन्द्रित रही है, हालाँकि अध्ययन के क्रम में

(i) स्वतंत्रता पश्चात् झारखंड विभाजन से पूर्व तक की स्थिति,

(ii) झारखंड विभाजन के तुरंत बाद की स्थिति तथा

(iii) बिहार राज्य की वर्तमान स्थिति का अध्ययन किया गया। स्वभाविक तौर पर तुलनात्मक विवरण भी प्रस्तुत किए गए हैं।

संदर्भः

1. मिश्र, गिरीष (2013), आर्थिक संवृद्धि, रोजगार और दरिद्रता निवारण, योजना–विकास को समर्पित मासिक, वर्षः 58, अंकः 10, अक्तूबर, पृष्ठ 29
2. नर्कसे, आर (2011)
3. मामोरिया, चतुर्भुज एवं जैन, एस.सी. (1994), भारत में आर्थिक नियोजन एवं विकास, साहित्य भवन, आगरा, पृष्ठ 7–8
4. वही, पृष्ठ 9–10
5. भारत की 15 की जनगणना के आंकड़े भारत सरकार, नई दिल्ली
6. वही
7. गरीबी के परिमाप पर तेंदुलकर समिति की रिपोर्ट
8. आर्थिक समीक्षा 2014–15, वित्त विभाग, बिहार सरकार, पटना
9. नर्कसे, आर (2009)
10. देव, एस. महेंद्र (2013), रोजगार और आर्थिक वृद्धिः नीतियां और रूझान, योजना–विकास को समर्पित मासिक, वर्षः 58, अंकः 10, अक्तूबर, पृष्ठ 11
11. हिन्दुस्तान दैनिक समाचार पत्र, पटना संस्करण, पटना, 26 सितम्बर 2014, पृष्ठ 2
12. इंटरनेषनल ग्रोथ सेन्टर, बिहार के वार्षिक सम्मेलन में बिहार के आर्थिक विकास पर विषेष सत्र में 25 सितम्बर 2014 को योजना आयोग के पूर्व उपाध्यक्ष मोंटेक सिंह अहलूवालिया का व्याख्यान